पूर्ण संख्या—८४

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

दिसम्बर १९४६ } वर्ष ८

अगहन २००३ } संख्या ६

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)

विदेश में ६)

इस प्रति का ।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थान

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

दिल्ली—प्रान्तों में यह सब से छोटा प्रान्त है, यह प्रान्त तो नाम मात्र का ही है, इस प्रान्त का बड़ा नगर तो केवल दिल्ली ही है इस प्रान्त की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ३३ मील और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ३० मील है, इस प्रान्त भर में ४ बड़े कस्बे व ३१५ ग्राम हैं।

नजफ़ गढ़, शाहदरा, भोगल व महरौली तो चार बड़े कस्बे हैं, इनके अतिरिक्त नरेला, कंझावला, नांगलोई, पालम्, बुआना, बादली, बुटाड़ी, बख्तावर पुर, तिहाड़, बिजवासन, जमालपुर, छावला, [illegible] दिल्ली, बदर पुर, मस्जिद मोठ, मुंडका, कराला, जोन्ती [illegible]ली पुर, खेड़ा गढ़ी, नरायना इत्यादि बड़े २ गांव हैं, इसके सिवा और सब छोटे २ गांव हैं।

पहले दिल्ली पंजाब का एक ज़िला ही तो था, १९११ ई० में जब यहां दर्बार हुआ था और महाराजाधिराज जार्ज पंचम यहां स्वयं पधारे तो उस समय उन्होंने कलकत्ता से राजधानी को हटा कर दिल्ली को ही राजधानी बनाने की घोषणा की, इस प्रकार फिर

देश दर्शन

इस विचारी उजड़ी वस्ती को वही राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उसी समय से यह वही अपना पुराना गौरव प्राप्त कर दिन दूनी रात चौगनी बढ़ती जा रही है। १ अक्टूबर १६१२ ई० को दिल्ली की तहसील के साथ थोड़े और गावों को मिला कर इसको पृथक प्रान्त नियत कर दिया गया, इस प्रान्त में आज दिन भी एक जिला और एक ही तहसील है और इसके सबसे बड़े अधिकारी चीफ कमिश्नर साहब बहादुर हैं।

सीमा—इसके उत्तर में जिला रोहतक की तहसील सोनीपत, दक्षिण में जिला गुड़ गांव की तहसील बल्लभ गढ़ और गुड़गांवा हैं, पूर्व में जिला मेरठ व जिला बुलन्द शहर, पश्चिम में जिला रोहतक है। सारे प्रान्त का क्षेत्र फल ५३० वर्ग मील है।

जन गणना—प्रान्त की पहिली जन गणना केवल ६,३६,२४६, थी, परन्तु १६४१ ई० की जन संख्या ६,१६,६८५ थी, और उस समय से यह लगातार बढ़ती ही जा रही है, इस समय १२ लाख से भी अधिक होगी। यह आंकड़ें देखते हुए कह सकते हैं कि यह जल्द ही दूसरे बड़े नगरों को पीछे छोड़ देगा।

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

जलवायु—साधारण तथा इस प्रान्त की जलवायु अच्छी ही है, परन्तु यहां पर वर्षा कम होती है, इस लिये गर्मियों में सख्त गर्मी और सर्दियों में सख्त सरदी पड़ती है।

ऋतु—यहां पर तीन बड़ी ऋतुयें होती हैं—जाड़ा, गर्मी, वर्षा। जाड़े का मौसिम—कार्तिक, मंगसिर, पोह और माह (नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी और फरवरी) यह चार महीने होते हैं।

गर्मी का मौसम—जाड़े के पश्चात् गर्मी होती है, फाल्गुन, चैत्र, बैशाख और ज्येष्ठ (मार्च, अप्रैल, मई और जून) यह चार महीने गर्मी के होते हैं।

वर्षा का मौसम :—गर्मी के पश्चात वर्षा आरम्भ होती है, आषाढ़, श्रावण, भादों और असौज (जौलाई अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर) यह चार मास वर्षा के होते हैं।

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से शीत ऋतु आरम्भ हो जाती है। परन्तु कठोर नहीं, दिसम्बर के अन्त या जनवरी के आरम्भ में तो बहुत ही ठंड होती है इन्हीं दिनों कभी कभी तो ऐसी ठंड पड़ती है कि तालाबों

का जल भी जम जाता है और खेती को भी बहुत हानि पहुँचती है। दिसम्बर के अन्त के सप्ताह से जनवरी के अन्त तक ४० दिन अधिक शीत के होते हैं, इन्हीं दिनों को चिल्ला अर्थात शीत के ४० दिन कहते हैं।

फरवरी और मार्च में बहार की ऋतु रहती है, इस समय न अधिक शीत न अधिक गर्मी होती है, इसी को वसन्त ऋतु भी कहते हैं। इस ऋतु में जंगल में बड़ी बहार रहती है और बसन्ती रंग के फूल अधिक दिखाई देते हैं, बड़ा ही सुहावना रहता है।

अप्रैल से गर्मी आरम्भ हो जाती है। मई, जून और जुलाई तो कड़ी गर्मी के महीने हैं। इनमें बड़ी तीक्ष्ण गर्म हवायें चलती हैं, जिनको लू भी कहते हैं। पृथ्वी और आकाश खूब ही तपते हैं, आकाश गर्द व गुब्बार से भरा रहता है और गाहे व गाहे आंधिया आती रहती हैं। दिन को आराम न रात को चैन। पहाड़ी हिस्से में तो और भी अधिक मुसीबत रहती है, पृथ्वी और पत्थर तो ऐसे तपने लगते हैं कि वहां के रहने वाले ही जानते हैं। अमीर लोग तो पहाड़ों पर चले

जा सकते हैं या ख़स की टट्टियाँ व पंखे लगा कर दिन बिता लेते हैं, परन्तु बेचारे ग़रीब क्या करें, उन्हें तो पेट पालने के लिये बाहर रह कर काम करना ही होता है। जुलाई के अंत या अगस्त के आरम्भ में जब वर्षा होने लगती है तभी उन बेचारों की तो जान में जान आती है। अगस्त और सितम्बर तो वर्षा के महीने ही हैं।

प्रान्त में औसतन २४ से २७ इञ्च तक वर्षा होती है। यह वर्षा है तो कम ही, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि वर्षा बिलकुल नहीं होती या बहुत कम होती है, इससे बेचारे किसानों को बड़ी हानि होती है। ग़रीब लोगों को ऐसे समय में बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है, न खाने को अन्न न पशुओं को चारा, बड़ी कठिनाई से अपना और अपने बच्चों का पेट पालते हैं। नहरों, रेलों और सड़कों के होने से भी इस दुर्दशा के समय में अच्छी सहायता करते हैं, इनसे बाहर से माल जहां अच्छी पैदावार होती है अन्न व चारा आ सकता है और नहरों से पानी दिया जा सकता है।

स्वास्थ्य :—जब से दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी बनी है, यहां के स्वास्थ्य विभाग ने बड़ी

उन्नति की है। यमुना के वेले को साफ करा कर ऊँचा करा दिया है, इससे बाढ़ के दिनों में नगर के पास पानी नहीं भरता, पहिले यहाँ खूब पानी भर जाता था, इससे बहुत मच्छर पैदा हो जाते थे और मलेरिया ज्वर फैल जाया करता था। डाक्टर रौस साहब की मालूमात के पश्चात कि मच्छरों से ही मलेरिया फैलता है स्वास्थ्य विभाग ने इस ओर बहुत ही ध्यान दिया है, इसी का परिणाम है कि अब यहाँ इतना ज्वर नहीं फैलता जितना सन १६०६ या १६०७ में फैला करता था, अब तो मकानों की नालियों तक में भी मच्छर पैदा न हो जावें इसका बहुत ध्यान रक्खा जाता है। नई देहली में तो इस कार्य का नमूना देखने योग्य है।

जो गांव नजफगढ़ की झील या यमुना नदी के एक दम समीप हैं वहाँ का जल वायु अब भी कुछ दूषित ही है, यहाँ पर तिल्ली की बीमारी प्रायः पाई जाती है, कभी कभी वर्षा अधिक होने या गर्मी अधिक पड़ने से हैज़ा (विसुचिका) का रोग फैल जाता है, यह रोग भी बड़ा भयंकर होता है। इससे रोगी को वमन और दस्त

होते हैं और घण्टों ही में प्राण ले लेता है। इससे बचने का उपाय बिना कुछ खाये पिये मेहनत का काम न करना चाहिये, उबाल कर ठंडा होने पर साफ किया हुआ पानी पीना चाहिये, सफाई का ख़ास ख़याल रखना चाहिये, हर एक चीज़ को मक्खियों से बचाना चाहिये ख़ास तौर से खाने पीने की चीजों को।

कभी कभी एक दूसरी बीमारी भी फैल जाती है जिसको (प्लेग) ताऊन की बीमारी कहते हैं। यह रोग एक प्रकार के पिस्सुओं के काटने से होता है जो प्रायः चूहों पर पाये जाते हैं। इसको रोकने का अच्छा उपाय चूहों का नाश करना व रोग के स्थान को छोड़ कर एकदम खुले मैदान में रहना और प्लेग का टीका करा लेना चाहिये, ऐसा करने से रोग का बहुत कम भय रहता है। हर एक बीमारी से बचने के लिये सफाई भी अति आवश्यक है।

पहाड़ी हिस्सों की जल वायु—भी उत्तम है, इसी लिये बहुत से लोग दिल्ली से महरौली ही जल वायु परिवर्तन के लिये जाया करते हैं, बहुतों ने तो वहां पर अपने मकान बना लिये हैं, अब वहाँ भी खूब रौनक है।

देश दर्शन

भूमि—प्रान्त की भूमि को चार विभागों में बांटी जा सकती है :—(१) खादर, (२) डाबर, (३) बांगर, (४) पहाड़ी ।

१ खादर—वह हिस्सा जो यमुना नदी के किनारे है, और जहां तक वर्षा ऋतु में पानी आ जाता है। यह भूमि बड़ी उपजाऊ है ।

२ डाबर—झीलों के आस पास की भूमि खासकर नजफ गढ़ और इसके आस पास की भूमि शामिल है, पुराने ज़माने में वर्षा के दिनों में यहां पानी भर जाता था और खेती खराब हो जाती थी, मलेरिया, बुखार इत्यादि बीमारियां फैल जाती थीं, अब एक नहर सरकार ने निकलवा दी है जिससे यहां का अधिक पानी यमुना में चला जाता है, इससे बहुत लाभ हुआ है।

३ बांगर—यमुना से दूर ऊँची भूमि, जहां वर्षा का पानी नहीं ठहरता, इसको नहरों तथा कूओं से सींचा जाता है ।

४ पहाड़ी—यह दिल्ली से दो मील उत्तर में चन्द्रावल के पास से आरम्भ होकर दिल्ली के आस पास से होता हुआ दिल्ली शहर से लगभग १० मील के अन्तर

पर मगेरका के पास दो शाखाओं में बट कर ज़िला गुड़ गांवा से होता हुआ राजपूताने में अरवली पर्वत से जा कर मिल गया है।

इन पहाड़ियों की अधिक से अधिक उँचाई समुद्र तल से १०४५ फुट है जो महरौली से कुछ मील की दूरी पर बेरी के पास भाटी ग्राम के निकट है।

इन पहाड़ियों की चौड़ाई भी एक सां नहीं है, कहीं बहुत चौड़ी और कहीं कुछ गज़ों की ही चौड़ाई में रह गई है। अड़ंग पुर के पास यही चौड़ाई १० मील से भी अधिक होगी, और चन्द्रावल के पास जो वांवटे के नाम से भी प्रसिद्ध है बहुत ही कम चौड़ी रह गई है।

इसी पहाड़ी पर एक मीनार बना हुआ है, जो फतहगढ़ या जीतगढ़ के नाम से विख्यात है, यह उन लोगी की यादगार में बनाया गया था जो सन १८५७ ई० के गदर में सरकार की सहायता करते काम आये। इस मीनार पर चढ़ कर देखने से दिल्ली का बड़ा ही सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

दिल्ली के दूसरी ओर इसी पहाड़ो पर जो आनन्द पर्वत के नाम से विख्यात है, राम जस कालेज के बड़े

विशाल भवन बने हैं, जिनको सरकार ने लड़ाई के दिनों में कालेज से फौज़ी कामों के लिये ले लिया था और बहुत सी और भी बारकें बनावाईं जो दूर से बड़ी सुन्दर लगती हैं।

अब तो लड़ाई के समाप्त हो जाने पर वह सब ही कालेज को सरकार ने लौटा दिया है।

इन पहाड़ियों पर बेरी की झाड़ियां, कीकर, बांसा तथा अन्य कई एक प्रकार की छोटी २ झाड़ियां उपजती हैं। दिल्ली के आस पास इन पहाड़ियों पर बहुत से बृक्ष लगाये गये हैं, इनसे पहाड़ी का यह भाग बड़ा ही सुन्दर मालूम होता है।

झंडे वाले से या मोतिया खान की झील के निकट से एक सड़क जो ठीक पहाड़ी पर से ही होती हुई नई छावनी जाने वाली सड़क से मिलाई गई है, इस पर जगह २ पर बैठने के लिये सड़क के किनारे ही पर थोड़ी २ दूरा पर गोल चक्कर बनाए हैं, इनमें बेचें भी बड़ी हैं, सायंकाल के समय बहुत स्त्री पुरुष इधर घूमने जाते हैं, वहां बैठ कर देखने से दिल्ली का दृश्य बड़ा ही सन्दर और सुहावना प्रतीत होता है।

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

भूरचना—मिट्टी के विचार से हम खेती की भूमि को भी तीन भागों में बांट सकते हैं — (१) डाकर, (२) रोसली, (३) भूड़।

डाकर—इसमें चिकनी मिट्टी बहुत होती है और इसमें ईख की उपज बहुत अच्छी होती है।

रोसली—इसमें न अधिक रेत होता है और न अधिक चिकनी मिट्टी ही होती है, दोनों मिट्टियां बराबर ही सी मिली होती हैं। इसमें उपज बहुत अच्छी होती है और यह भूमि बहुत अच्छी समझी जाती है।

भूड़—यह तो रेतीली ही होती है, इसमें जो चिकनी मिट्टी बहुत ही कम होती है, उपज भी इसमें बहुत कम होती है।

सिंचाई—सिंचाई के बिचार से खेतों को हम चार भागों में बांट सकते हैं—बरानी, चाही, नहरी, डहरी। इसी प्रकार से सिंचाई भी चार प्रकार से होती है। वर्षा से, कुओं से, नहरों से, डहरों से।

बरानी—जो वर्षा के जल से सींची जाती है।

चाही—जो कुओं से सींची जाती है।

नहरी—जो नहरों से सींची जाती है।

डहरी—जो झीलों या तालाबों के आस पास होती

है। वर्षा का पानी सूख जाने से यहां फसल बोई जाती है और पानी की ज़रूरत होने पर इन्हीं से फसल को पानी देते हैं।

फसलें :—प्रान्त में अधिकांश दो फसलें ही पैदा होती हैं। साढ़ी व सावनी इन्हीं को रबी और ख़रीफ भी कहते हैं।

साढ़ी (रबी)—असौज या कार्तिक में बोई जाती है और चैत, बैसाख में काटी जाती है, इस फसल में गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, तरा इत्यादि पैदा होते। कोई कोई ज़ीरा, धनिया, सौंफ इत्यादि भी बो लेते हैं।

सावनी (खरीफ)—असाढ़ सावन में बोई जाती है और असौज, कार्तिक में काट ली जाती है। इस फसल में—मक्का, ज्वार, बाजरा, मोठ, मूँग, उड़द, तिल, लोभिया, सन इत्यादि पैदा होते हैं। वर्षा समय से होने से कपास भी खूब बोई जाती है। कही कहीं ईख भी बोई जाती है यह फाल्गुन, चैत्र के महीने में बोई जाती है मघसर पूष के महीनों में काट कर गुड़, शक्कर, खांड वगैरह बनाने लगते हैं। नरेले के आस पास लाल

मिर्च भी ख़ूब होती है और यह यहाँ से बाहर भी भेजी जाती हैं। खूब होती हैं।

जायद रबी—इन दो फसलों से अतिरिक्त एक फ़सल और भी होती है, इसको जायद रबी कहते हैं, इसमें तम्बाकू, खरबूजे, ककड़ी, खीरे, तरबूज़ वगैरह होते हैं। यह फसल माह फाल्गुन में बोते हैं और बैसाख ज्येष्ठ में उतारते हैं। यमुना के बेले में खरबूज़े, तरबूज़, खीरे, अच्छे पैदा होते हैं और तालाबों और झीलों में सिंघाड़े खूब पैदा होते हैं। ऋतु के अनुसार सब्जी तरकारियाँ भी खूब पैदा होती हैं, परन्तु यहाँ की सब्जी तरकारियाँ इतनी मात्रा में पैदा नहीं होती जो यहाँ के निवासियों के लिये पर्याप्त हों, सहारनपुर मेरठ, अलीगढ़, फर्रुखाबाद इत्यादि स्थानों से बहुत सब्जियां यहां आकर बिकती हैं।

सब्जी—आलू, रतालू कचालू, अर्वी, तोरी, भिंडी, गोभी, टिंडे, सेम, बाकला, बैंगन, घीया, सीताफल, करेला, गाजर, मूली, शलजम, धनिया, चुकंदर, पोदीना, प्याज, लहसुन, टमाटर, मटर, कचनाल, लोभिया, कुलफा, बथुआ, मेथी इत्यादि। दिल्ली या

इसके आस पास पैदा होते हैं। दिल्ली नगर में ओखले के पास मथुरा रोड पर जो साक पात या फसलें पैदा होती हैं वह ऐसे उत्तम और स्वादिष्ट नहीं होते जैसे प्रान्त के और स्थानों पर होते हैं, इसका मुख्य कारण इनमें गंदा पानी देना है इससे फसलें तो जल्द पैदा होती हैं परन्तु स्वादिष्ट नहीं होती।

फल—इस प्रान्त में इतने फल भी नहीं पैदा होते जो यहां के निवासियों की आवश्यकता को पूरा कर सकें, इसलिये अधिकांश फल बाहर से ही आते हैं। सब्ज़ी मण्डी के आस पास वाले इलाक़े में कई एक मील के घेरे में और महरौली (कुतुब) के आस पास कुछ बागात हैं जिनमें—आम, जामुन, अमरूद, शहतूत, आडू, फालसा, बेर, कमरख, खिरनी, लौकाट, केले, खट्टे, मीठे, नीम्बू, मालटे, नारंगी, अलूचे, शंतरे, अंजीर, इत्यादि लगाये हुये हैं, परन्तु यह आवश्यकता को देखते हुए बहुत ही कम हैं।

फूल—यहां पर गेंदा, गुलाब, चम्पा, चमेली, बेला मोलसरी, मोतिया, मोगरा, गुलदाऊदी, सूरज मुखी

इत्यादि और भी कई प्रकार के विलायती फूल भी होते हैं।

वृक्ष—नीम, कीकर, सिरस, इमली, वड़, पीपल, गूलर, ढाक, झाऊ, जाल, वकाइन इत्यादि के वृक्ष आम पाये जाते हैं। दिल्ली शहर व नई दिल्ली व इसके आस पास पहाड़ियों पर तरह तरह के बृक्ष लगाये गये हैं, जिनमें अमलतास अजुँन, बहेड़ा जमोवा और अर्जुन इत्यादि कई एक प्रकार के बृक्ष अलग अलग सड़कों अलहदा अलहदा किस्म के लगाये गये हैं जो बड़े सुहावने लगते हैं। छोटे मोटे और भी कई एक प्रकार के वृक्ष मिलते हैं।

पशु—पालतू—गाय, बैल, भैंस, ऊंट, घोड़ा, गधा, खच्चर, भेड़, बकरी, कुत्ता, इत्यादि हैं जो आम तौर से पाले जाते हैं।

जंगली—भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी, खरगोश, नील गाय, हरिण इत्यादि हैं, पहाड़ी भाग में कहीं कहीं चीते और तेंदुए भी दिखाई देते हैं।

यमुना के खादर में जंगली सुअर भी बहुत मिलते हैं। इन सब पशुओं के अतिरिक्त एक और जानवर

भी है, इसको पालतू भी नहीं कहा जा सकता और न जंगली ही, वह है बन्दर। यह बड़ा उपद्रवी होता है, जंगलों में भी रह सकता है, गावों में भी और शहरों में भी। दिल्ली शहर में तो यह जानवर बहुत हैं परन्तु नई दिल्ली में तो हैं ही नहीं। आस पास के इलाके में बहुत हैं।

पक्षी—यों तो छोटे मोटे पक्षी जो सब जगह हैं, यहां भी पाये जाते हैं, परन्तु जो पक्षी पालतू हैं, उनमें तोते मोर, बुलबुल, कबूतर, बटेर, तीतर, इत्यादि हैं। जङ्गली जानवरों में बाज़, उल्लू, चील, कौवे इत्यादि जङ्गली जानवर हैं।

मोर भी बहुत सुन्दर पक्षी है, इसके रङ्ग विरङ्गे पर व गर्दन कैसी भली मालूम होती है, जब यह नाचता है तो परों का मुकुट कैसा भला लगता है। तीतर बटेर को लोग लड़ाने के लिये पालते हैं और हार जीत के खूब दाव लगाकर लड़ाते हैं। जामा मसजिद के पास अकसर शौक़ीन लोग इनको बाज़ी लगा कर लड़ाते हैं।

पानी के किनारे तालाबों और झीलों में, मुर्गा-बियां, बतखें, काज़, बगुले, सारस, कुलंग, हवासील

इत्यादि पाये जाते हैं। पानी के पक्षियों में बहुत से पक्षी ऐसे होते हैं जो केवल जाड़े की ऋतु बिताने के लिये ही अक्टूबर के आरम्भ में इधर आ जाते हैं और मार्च के आरम्भ में फिर लौट जाते हैं। यह ऐसी जगहों से आते हैं जहाँ सर्दी बहुत अधिक पड़ती है और बर्फ जमने लगती है।

जल जन्तु—झीलों, तालाबों, नदियों में मछलियां, कछुवे, बड़े कछुवे जिनको (ढाढल पातल) भी कहते हैं कसरत से पाये जाते हैं, यमुना में मगर मच्छ (जिनको घड़िआल या भोंट भी कहते हैं) भी पाये जाते हैं।

विषैले जन्तु—सांप, बिच्छू, गुहेरे इत्यादि भी मिलते हैं। सांप आम तौर पर गर्मी के आरम्भ ही से निकलते हैं और बरसात में खूब निकलते हैं। अक्टूबर के प्रारम्भ से फिर छिपने लगते हैं और दीपावली के बाद तो बहुत ही कम दिखाई देते हैं।

शिकार—यों तो शिकारी लोग मछली, हिरन, खरगोश, तीतर, हरयल इत्यादि का शिकार करते ही हैं परन्तु अंग्रेज लोग जंगली सूअर का शिकार बड़े चाव से करते हैं और दिसम्बर के महीने में लोमड़ी और गीदड़ों का शिकार कुत्तों से करते हैं। सीलमपुर नहर

के बङ्गले के आस पास यह कुत्तों का शिकार मारना देखने योग्य है। बड़े बड़े अंग्रेज और मेम कारों में अपने कुत्तों को साथ लेकर यहाँ आते हैं, मोटरों की लाइनें लग जाती हैं बड़ी ही चहल पहल रहती है।

झीलों, तालाबों, यमुना के किनारे और ओखले पर मछलियों का शिकार करने वालों के झुण्ड के झुण्ड दिखाई देते हैं और झीलों के किनारे मुर्गाबियों वगैरह का शिकार भी होता है।

खनिज पदार्थ—भूमि को खोद कर जो वस्तुयें निकाली जाती हैं उनको खनिज कहते हैं और जिस जगह से यह निकाली जाती हैं उनको खान कहते हैं।

इस प्रान्त में कंकर, खड़िया, पत्थर, बिल्लौर और बजरी निकलती हैं।

कंकर—नांग लोई व इसके आस पास निकलती है, यह सड़कों के कूटने और जला कर चूना बनाने के काम आता है, यह चूना मकान बनाने के काम में आता है। रेत भी बहुत होता है परन्तु यह घटिया किस्म का है।

खड़िया—महरौली, ओरङ्गपुर, मलकपुर कोही के

स्थानों पर निकाली जाती है, यह चाक बनाने के काम आती है, पुताई के भी काम आती है।

पत्थर—दिल्ली और तुग़लकाबाद के पास पत्थर की खानें हैं, इनसे रोड़ी बनाई जाती है, बड़े बड़े टुकड़े मकानों में काम आते हैं और मिट्टी, सड़क व रेल की पटरियों के नीचे डालने के काम आती है।

बिलार—औरङ्गपुर के पास मिलता है यह स्थान दिल्ली से १० मील पश्चिम की ओर है, व्यापारिक दृष्टि से कोई लाभ नहीं इसलिये यह नहीं, निकाला जाता है।

बजरी—महरौली और तुग़लकाबाद के बीच के पहाड़ी इलाके में कई स्थानों पर मिलती है। यह लाल रंग की होती है और इसमें भोडल के टुकड़े भी मिले रहते हैं, यह शीशे की तरह चमकते हैं बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं, यह सड़कों और पगडंडियों पर फैलाने के काम आते है।

झीलें—खास दिल्ली नगर में झन्डे वाली पहाड़ी का पानी जहां जमा होता है, उसको झील मोतिया खान कहते हैं।

देश दर्शन

महरौली से कुछ मील दूर फतहपुर वेरी के पास एक और झील है इसको झील फतहपुर वेर कहते हैं।

दिल्ली से लगभग १२ मील पश्चिम की ओर कस्बा नजफगढ़ है, इस कस्बे से चार मील के अन्तर पर एक बहुत बड़ी झील है, इसको झील नजफ गढ़ कहते हैं। इसमें सदा पानी भरा रहता है, दिल्ली के दक्षिण-पश्चिम के प्रान्त या वर्षा का पानी इसी झील में आकर जमा होता है। गुड़गांवां जिले से साहिवी नाम की नदी भी इसी झील में आकर गिरती है। रोहतक ज़िले के कुछ हिस्से का पानी भी इसी झील में आता है। वर्षा काल में तो यह पानी दूर दूर तक फैल जाता है। १८३० ई० में भी इसका क्षेत्रफल ५३ मील के लगभग था, इससे पहिले यह ८० मील के लगभग था; यहां की पृथ्वी पानी में डूब जाती थी इसके कारण खेती को भी हानि होती थी और बीमारी भी फैलती थी। सरकार ने जब से छावाला के पास से निकाल कर वज़ीराबाद के पास यमुना में डाल दी है उससे बहुत सा पानी निकल जाता है, और अब पहिले के समान इसमें पानी नहीं रहता। यहां सिंघाड़ा बहुत होता है।

नहरें—यों तो इस प्रान्त में कई नहरें हैं, परन्तु जमुना नदी की पश्चिमी नहर जिसको नहर (जमन ग़रबी) कहते हैं यही सबसे पुरानी नहर है और इसी नहर के पानी से इस प्रान्त की बहुत सी भूमि सींची जाती है।

जमन गरबी—यह नहर फीरोज़ शाह तुग़लक के समय में सआदत खां ने निकलवाई थी, परन्तु कुछ समय के अनन्तर बन्द कर दी गई थी। और बहुत समय तक बन्द पड़ी रही। अंग्रेजी सरकार ने इसको दोबारा १८-१५ ई० में खुदवाना आरम्भ किया और १८१६ में यह फिर खेतों को पानी देने लगी और आज दिन भी दे रही है।

आगरा नहर—यह ओखला स्थान से जो दिल्ली से आठ मील पश्चिम की ओर है यमुना नदी को बांध कर निकली है, इससे इस प्रान्त को तो सिंचाई में कोई लाभ नहीं क्योंकि यह निचाई में होकर बहती है और जमीनें इससे बहुत ऊंची हैं। ओखला जहां से यह नहर निकाली है देखने योग्य स्थान है। बहुत से लोग मनो विनोद के लिये यहां आते हैं, रविवार तथा छुट्टियों के दिनों में या बरसात के दिनों में जब घटा उमड़ी रहती

है, यहां पर बड़ी भारी भीड़ रहती है और खूब चहल पहल देखने को मिलती है। सब जाति के लोग यहां घूमने आते हैं। नहर के निकलने का स्थान होने से नहर विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिये यहां दोनों ओर कोठियां और निवास स्थान बने हैं। नहर विभाग की ओर से यहां किश्तियां भी पड़ी हैं। बहुत से शौकीन लोग नहर विभाग के अधिकारियों से आज्ञा लेकर इनमें बैठ कर नदी के भ्रमण का आनन्द लेते हैं। बहुत से शौकीन मछली का शिकार खेलने ही यहां आते हैं। मनो रंजन के लिये अच्छा स्थान है।

हिन्डन नहर—हिन्डन नदी से निकाल कर यमुना में मिला दी गई है, यह खेतों को पानी देने के लिए नहीं बनाई गई है। ग्रीष्म ऋतु में जब यमुना नदी में जल की कमी हो जाती है और नहर आगरा के लिये पानी की कमी होती है तो इस नहर के द्वारा हिन्डन का पानी यमुना में ले जाते हैं।

यमुना की पूर्वीय नहर–इसको नहर जमन शर्की भी कहते हैं। यह नहर शाहदरा से कुछ मील के ऊपर से मेरठ के ज़िले से इस प्रान्त में प्रविष्ट होती है और

लोहे के पुल के पास यमुना नदी में गिरा दी गई है। यह नहर भी इस प्रान्त की कुछ भूमि को पानी देती है।

नजफ गढ़ की झील की नहर—यह झील नजफ गढ़ से निकाल कर यमुना नदी में डाली गई है, वर्षा काल में जब झील नजफ़ गढ़ में अधिक पानी इकट्ठा हो जाता है तो इसी नहर के रास्ते से यह पानी यमुना नदी में चला जाता है।

इस प्रकार इस प्रान्त में छोटी बड़ी सब नहरें केवल ५ हैं।

निवासी—यों तो यहाँ सब धर्मों के लोग रहते हैं, अधिक संख्या तो हिन्दुओं की ही है, मुसलमान भी अच्छी संख्या में हैं ईसाई, पारसी, बंगाली, मद्रासी इत्यादि हर प्रान्त के लोग नजफ़ गढ़ के आस पास के कुछ गांवों में पठानों की भी आबादी है। हिन्दुओं में ब्राह्मण, वैश्य, जाट, कायस्थ, खत्री और हरिजन इत्यादि हैं।

भाषा—दिल्ली शहर में प्रायः उर्दू भाषा का अधिक प्रयोग होता है। दिल्ली के बाहर जो हिस्सा जिला गुड़ गांवा की तहसील बल्लभगढ़ से मिला हुआ है वहां पर

ब्रज भाषा (जो हिन्दी भाषा ही है) बोली जाती है। यह बड़ी मधुर और प्रिय होती है। उत्तरी भाग में जो रोहतक जिले की तहसील सोनीपत से मिला हुआ है, यहां उर्दू, हिन्दी और अन्य कई एक भाषाओं के भी बिगड़े हुये शब्द सम्मिलित हैं बोली जाती हैं, यह हरयाना भाषा कहलाती है। पंजाबी भी ख़ूब बोली जाती है। यों तो हर प्रान्त वाले अपनी अपनी भाषायें ही आपस में बोलते हैं।

पेशे—क्योंकि यहां पर भिन्न भिन्न जातियों के लोग रहते हैं, इसलिये उनके पेशे भी अलग अलग ही हैं। खेती बाड़ी, व्यापार, नौकरी, शिल्पकारी इत्यादि इत्यादि।

ब्राह्मण—प्रान्त के हर भाग में पाये जाते हैं, अधिकांश पण्डिताई और पढ़ाने का काम करते हैं, कुछ नौकरी भी करते हैं। गांव में रहने वाले खेती बाड़ी भी करते हैं। सेनाओं में भी भरती होते और बहादुरी का अच्छा काम करते हैं। शिक्षित भी अच्छे हैं।

बनिये—यह भी प्रान्त में सब जगह पाये जाते हैं, कोई गांव भी ऐसा न होगा जहां थोड़े बहुत घर

इन लोगों के न हो। यह लोग अधिकतर दुकानदारी, लेन देन, करते है, कुछ नौकरी भी करते हैं; अच्छे ओहदों पर भी है, कुछ खेती वाड़ी भी करते है। इनमें जो अग्रवाल है वह अपने आपको राजा अग्रसेन को सन्तान बताते है जो किसी समय अगरोहा का राजा था, जिसके समय के खंडर आज भी जिला हिसार में पाये जाते हैं।

राजपूत—प्रान्त में कई एक स्थानों पर बसे है, अधिकांश खेती वाड़ी करते है। ये लोग पुराने समय में तलवार के बड़े धनी थे और आन के बड़े पक्के थे। राजपूत आजकल भी सेना में खूब भर्ती होते है तथा अपनी वीरता दर्शाते है।

जाट—खेती वाड़ी ही इन लोगों का पेशा है। आजकल विद्या का भी इनमें खूब प्रचार है। इनमें (करेवा) विवाह का भी खूब प्रचार है। इनकी स्त्रियां भी बड़ी परिश्रमी होती है घर का सब काम काज करती है और खेती बाड़ी के कामों में भी पुरुषों का खूब हाथ बटाती है। प्रान्त में कई एक बड़े घर भी हैं जो बड़े धनी है। ये लोग भी सैना में खूब भर्ती होते हैं तथा अच्छे लड़ाके और बहादुर हैं।

कायस्थ--ये लोग अधिकतर शहरों में बसते हैं तथा अच्छे पढ़े लिखे होते हैं। चलपुरी और चीरेखाना में अधिक बस्ती है। नौकरी, वकालत, दुकान-दारी आदि इनके पेशे हैं।

मुसलमान—इनकी भी अधिक संख्या शहर मे ही है नजफगढ़ के आस पास के कुछ गावों में पठान लोग भी रहते है यह सेना में खूब भर्ती होते है तथा अधिकतर समुद्री वेड़े में जाते हैं। इनमें कुछ लोग धनी भी है और नवाब कहलाते है। कुछ, लुहार, बढ़ई, नक्काशी, महमारी, कपड़ा बुनने, जूता बनाने, बर्तन बनाने आदि के काम करते है। कुछ नोकरी व मजदूरी करते हैं और कुछ मवेशी पालकर, दूध बेचकर तथा कुछ भेड़ बकरियों का लेन देन करके अपना पेट पालते हैं।

हरिजन--ये लोग अधिकतर करौलबाग, रेगड़पुरा और देवनगर में रहते हैं। मेहनत मजदूरी करना, चमड़ा रगना तथा जूता आदि बनाना इनके विशेष काम हैं।

गूजर-ये लोग कम पढ़े लिखे हैं तथा अधिकतर दूध बेचने का काम करते हैं। मवेशी पालना तथा

उनका लेन देन करना इनका विशेष व्यवसाय है। खेती बाड़ी भी करते हैं और महरोली तथा चन्द्रावल में इनकी अधिक बस्ती है।

अहीर—नजफ गढ़ तथा बादली के समीप इनकी बस्ती है, खेती बाड़ी इनका मुख्य व्यवसाय है। इनके रस्म रिवाज गूजरों और जाटों से मिलते जुलते हैं। ये लोग सीधे सादे तथा अच्छे परिश्रमी हैं। इनमें शिक्षित तथा धनवान लोग कम हैं।

सिक्ख—यह लोग भी सब ही जगह बसे हैं परन्तु शहर में अधिक है। अच्छे बलवान मेहनती तथा लड़ाके होते हैं पल्टन में खूब भर्ती होते हैं अच्छे पढ़े लिखे हैं नौकरी ठेकेदारी मोटर ड्राइवरी और दुकानदारी इत्यादि भी करते हैं कुछ मेहनत मज़दूरी भी करते हैं कुछ लोग अच्छे धनी और बड़े बड़े ठेकेदार भी हैं इनमें संगठन भी बहुत है। दूसरी तथा अन्य लोग भी जो थोड़ी संख्या में हैं इसी प्रकार नौकरी चाकरी तथा सरकारी नौकरियों पर अपना निर्वाह करते हैं।

मारवाड़ी—नगर में बहुत से लोग बाहर से आकर बस गये हैं इन बसने वालों में अधिक लोग मारवाड़ी हैं। सर पर पगड़ी तथा कानों में मुर्की इनका आम

पहनावा हैं यह व्यापार में बड़े दक्ष हैं तथा दलाली विदेशों से व्यापार इत्यादि करते हैं। देहली व्यापार का बड़ा केन्द्र है। यहाँ पर हर प्रकार की वस्तुयें दिसावर से बिकने आती हैं और यहां से बिकने आती हैं और यहां से दिसावर को जाती हैं।

यहाँ के भिन्न भिन्न बाज़ारों में भिन्न २ वस्तुएँ मिलती है कपड़े के लिये चाँदनी चौक में कई कटरे हैं। एक नया कटरा कम्पनी बाग़ के सामने गिर्जे के पासही बना है। जिसको (क्लाथ मार्केट) के नाम से संबोधन करते हैं। यहाँ पर भी कपड़े की खूब बिक्री होती है अचार मुरब्बा मसाले चटनी सुगन्धित देशी तेल तथा चाँदी सोने के वर्क इत्यादि खारी बावरी में मिलते हैं बिसात खाने शीशे का सामान छतरियाँ इत्यादि सदर बाजार में मिलते हैं।

बर्तन—ताम्बे पीतल लोहे और काँसे सिलवर के बर्तन, लोहे का सामान तथा कागज़ चावडी बाज़ार से मिलता है। इमारती लकड़ी लोहा पत्थर लाल कुआं काजी हौज और तेली वाड़े से मिलते हैं॥

इसी प्रकार कबाड़ खाने के सामान के लिये भी जामा मस्जिद व मोतिया खान के कबाड़ो विख्यात है।

जवाहरात और सोने चाँदी के आभूषणों और बर्तनों के लिये बड़ा दरीबा खास है।

धार्मिक पुस्तकों तथा स्कूल की किताबों व रौशनाई वाली मशुहूर दुकाने तथा इत्र व तैल वालों की दुकाने तथा गोटे ठप्पे वालों की दुकाने भी इसी बड़े दरीबे में हैं।

परावठे वालों की प्रसिद्ध दुकाने छोटे दरीबे में हैं। अब तो दो चार अच्छी बड़ी दुकाने साड़ो बोटे व बनारसी कपड़े वालों की भी हैं। इसी परावठे वाली गली के परावठे देहली में बड़े विख्यात हैं। बाहर से आने वालों को कम से कम एक बार तो यहां अवश्य भोजन कर देहली के परावठों का स्वाद लेना चाहिये।

चाँदनी चौक में—रिज़र्व बैंक के सामने (कमलालय) नाम की बंगाली मिठाई वाले की दुकान है जो बहुत ही पुरानी है। इस पर बंगला मिठाई अच्छी मिलती है, यों तो आज कल और भी फ़वारे तथा चांदनी चौक में ही कई एक बंगाली मिठाई की दुकानें हैं, कोतवाली के

थोड़ा आगे घंटा घर की तरफ को शाही घंटे वाले हल-वाई की पुरानी मशहूर दुकान है।

सेंट्रल बैंक के पास ही एक दही बड़े वाला भी अच्छे दही बड़े बेचता है। उसी के थोड़ा दूरी पर एक भंग वाले ठेकेदार की दुकान है उसी दुकान के साथ ही एक खोमचे वाला बैठता है, यह आलू की टिकया व घीया की लौज व गाजर का हलवा बहुत उत्तम बनाता है।

घंटाघर के आस पास दोनों ओर मलाई की बरफ फालूदा, आलू छोला इत्यादि की अच्छी दुकान हो गई है, अच्छा सामान रखते हैं। घंटाघर व फतहपुरी के बीच एक मुसलमान हलवाई की मशहूर दुकान है जहां से हलवा सोहन व अन्य मिठाइयां मुसलमान साहबान खूब खरीदते हैं।

यों तो बहुत सी जगह हैं जहां अच्छी अच्छी चीजें बनती हैं और बिकती हैं, अपनी रुचि के अनुसार पूछ ताछ कर मालूम कर सकते हैं, जहाँ अच्छा लगे वहाँ से लें। हर वस्तु या स्थान का ब्योरेवार लिखना तो इस अंक का बढ़ाना ही है, और इस समय जो कागज का अकाल है वह पाठकों से छिपा नहीं है,

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

समय के अनकूल होने पर दिल्ली दर्शन में ब्योरे वार यथा शक्ति सब हाल लिखने की चेष्टा करेंगे। यह तो दिल्ली प्रान्त अङ्क संक्षेप में ही लिखा जा रहा है। आशा है पाठकों को इससे भी पर्याप्त ज्ञान या जानकारी होगी।

शिल्पकारी—इस दृष्टि से भी यह अच्छा स्थान है, हज़ारों मनुष्यों की जीविका तो केवल गोटे ठप्पे के काम से ही चलती हैं। बहुत सी स्त्रियां गोखरू हो मोड़तीं हैं, बहुत सी कसीदा निकालती, टोपियां बनाती, गोटा टांकती हैं इसी प्रकार बहुत से मनुष्य भी इसी गोटे के काम में लगे रहते हैं।

सब्ज़ी मण्डी की ओर कई एक मिलें और कारखाने हैं। किसी में कपास बेली जाती है, किसी में कपड़ा बुना जाता है, किसी में मैदा बनाई जाती है, इसी प्रकार और भी कई एक छोटे बड़े कारखाने हैं, दिल्ली क्लाथ मिल और बिरला क्लाथ मिल दो बड़े कपड़े के मिल हैं इनमें हज़ारों आदमी काम करते हैं।

दिल्ली के आठ मील दक्षिण में ओखला रेलवे स्टेशन के पास मथुरा रोड पर एक कारखाना चीनी के वर्तन बनाने का बना है यह ईश्वर पाटरीज के नाम से

विख्यात है। और भी कई एक पाटरीज़ हैं, ग्वालियर पाटरीज़ भी विख्यात है और बर्तन, खिलौने इत्यादि अच्छे बनाते हैं। यह कारखान अच्छा बड़ा है और एरोड्रोम के पास बराबर से महरौली वाली सड़क से दायें हाथ को जाते समय रास्ता जाता है, इनके अतिरिक्त तेज़ाब, कैमीकल्स, इत्र तैल, होज़री (मौजा बनयान) इत्यादि के भी कारखाने हैं, ढलाई, निकल खराद वगैरा का भी ख़ूब काम होता है। इसी प्रकार बटन निवार वत्यादि बहुत से छोटे २ कारखाने हैं। इनके अतिरिक्त, जवाहिरात, चांदी सोने, मीनाकारी, इत्यादि का भी खूब काम होता है यह काम अधिकांश चांदनी चौक और बड़े दरीबे में होता है। ताम्बा, कांसी, पीतल इत्यादि के बर्तनों का भी खूब कारबार होता है चावड़ी बाजार इसका बड़ा सेंटर है। यहां इसकी बहुत दुकानें हैं लाख की चूड़ियां, सादी और कामदार जूतियां भी प्रसिद्ध हैं। यह माल यहाँ से देसावरों को भी खूब जाता है। बिल्ली मारान इसका ख़ास बाज़ार है।

शाहदरा, नरेला, नजफगढ़, भोगल यह अच्छी मण्डियां हैं।

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

शाहदरा—शक्कर और खांड की बड़ी मण्डी है, गुड़ और चीनी को मिला कर बूरा बनाई जाती है, इसका यहाँ पर बड़ा व्यापार है।

नरेला–लाल मिर्च की बड़ी मण्डी है।

नजफगढ़ और भोगल—देहातों की ज़रूरत के लिये अच्छी मण्डियाँ हैं, यहाँ देहात वालों की अच्छी रौनक रहती है।

रेलें—दिल्ली रेलों और सड़कों के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्व का स्थान है, यहां से कई एक भिन्न २ रेलें भिन्न २ स्थानों को जाती हैं। यह एक बड़ा जङ्कशन है, स्टेशन भी बड़ा विशाल है, यहां से ईस्ट इण्डियन रेलवे (E. I. R.) जो यहां से कल-कत्ता को जाती है, यह सब से पुरानी लाइन है, इस प्रान्त में इसके तो केवल दोही स्टेशन हैं। देहली जङ्कशन और शाहदरा जङ्कशन, इसको पूर्व-लाइन भी कहते हैं। इसी की एक शाखा अम्बाला कालका रेलवे कहलाती है, सब्जी मण्डी, बादली और नरेला इस प्रान्त में इसके तीन स्टेशन हैं। गाजियाबाद तक यह भी नार्थ वेस्टर्न रेलवे (N. W. R.) ही कहलाती है।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे, (N. W. R.) यह गाज़ियाबाद, मेरठ, सहारनपुर होती हुई लाहौर, पेशावर को चली गई है इस प्रान्त का केवल एक स्टेशन शाहदरा जङ्कशन ही है। इसी की एक शाखा सोनीपत की तरफ गई है, दिल्ली, सब्जी मण्डी, बादली और नरेला इसके स्टेशन इसी प्रान्त में हैं।

इसी लाइन की एक शाखा जो सदर्न पंजाब रेलवे भी कहलाती है दिल्ली से रोहतक, भटिण्डा होती हुई लाहौर को चली गई है। इस प्रान्त में दिल्ली, किशनगंज और लोई इसके तीन स्टेशन हैं।

अवध रुहेलखण्ड रेलवे O. R. R.—यह दिल्ली से गाजियाबाद, हापुड़, मुरादाबाद होकर देहरादून को चली गई है, इस प्रान्त में शाहदरा जंक्शन ही इसका केवल एक स्टेशन है। इसको गंगा लाइन भी कहते हैं अब यह भी E. I. R. से ही मिली है।

ग्रेट इन्डयन पेनिन्सुला रेलवे G. I. P.—यह यह मथुरा, आगरा होती हुई बम्बई तक चली गई है, नई दिल्ली, निजामुद्दीन, ओखला और तुग़लकाबाद इसके स्टेशन हैं जो इस प्रान्त में ही हैं।

दिल्ली प्रान्त-दर्शन

बाम्बे बड़ौदा एंड सेंट्रल इन्डिया रेलवे B. B. & C. I.—इसकी दो शाखायें हैं। एक बड़ी, दूसरी छोटी। एक शाखा जो बड़ी है वह दिल्ली से मथुरा, भरतपुर होती हुई बम्बई को चली गई है। इस प्रान्त में तो इसके भी वही G. I. P. वाले ही दिल्ली, नई दिल्ली निज़ामुद्दीन, ओखला और तुगलकाबाद के स्टेशन ही इसके भी स्टेशन हैं।

जी० आई० पी० मथुरा से आगरा होती हुई चली गई है और बी० बी० एण्ड सी० आई०—मथुरा से भरतपुर होती हुई चली गई है। दूसरी जो छोटी शाखा है यह गुड़गांवा से अलवर होती हुई जैपुर, अजमेर को तरफ चली गई हैं, इसकी पटरी कम चौड़ी और गाड़ियां भी छोटी हैं। इसलिये यह छोटी लाइन कहलाती है। इस प्रान्त में दिल्ली, सराय रुहेल्ला, दिल्ली छावनी, पालम और बिजवासन इसके स्टेशन हैं।

इनके अतिरिक्त एक और लाइन जो छोटी लाइन के नाम से प्रसिद्ध है।

शहादरा, सहारनपुर रेलवे S. S. R.—इसकी कुल लम्बाई केवल ९२ मील ही है यह तो बी०बी० एण्ड सी० आई० की छोटी लाइन से भी बहुत छोटी है, इसका

बहुत ही छोटा सा इंजिन है और छोटी छोटी गाड़ियाँ हैं, चाल भी धीमी ही है, बहुत से लोग भाग कर भी इस पर चढ़ जाते हैं और चली से उतर भी जाते हैं, इसकी छतों पर भी बैठ कर लोग सफर कर लेते हैं। यह शाहदरा से चलकर खेखड़ा, बागपत, बड़ौत, कांधला, शामली, थाना भवन, ननौता होती हुई सहारनपुर पहुँचती है। केवल शहादरा ही इस प्रान्त में इसका स्टेशन है। आमदनी के लिहाज़ से यह सबसे अच्छी है, यह बहुत ही उपजाऊ भाग से निकाली गई हैं, और इसके साथ न कोई पक्की सड़क या और कोई याता यात का साधन हो है। यह मार्टिन एंड कम्पनी की लाइन है। सुना जाता है कि जल्द ही यह भी और लाइन की तरह सरकार के अधिकार में ही जाने वाली है।

सड़कें।—रेलों के अतिरिक्त बहुत सी सड़कें भी हैं जिनमें कुछ पक्की और कुछ कच्ची हैं।

१—पक्की—सड़के आज़म—यह सड़क कलकत्ते से दिल्ली होती हुई पेशावर तक चली गई है, यह बहुत पुरानी और विख्यात है।

२—दिल्ली से महरौली होती हुई गुड़ गांवा को

जाती है, यही सड़क अलवर की तरफ को होती हुई जैपुर को चली गई है।

३—यह सड़क दिल्ली से नई छावनी बसंत होती हुई गुड़गांवा को जाती है।

४—दिल्ली से नांगलोई होती हुई रौहतक को चली गई है।

५—दिल्ली से नजफ गढ़ को जाती है।

६—महरौली से बदरपुर को चली गई है।

७—एक सड़क जो आगरा, मथुरा की तरफ से आकर बदरपुर ओखला, निज़ामुद्दीन के पास से होती हुई सड़क आज़म में ही मिल गई है।

१—कच्ची कड़क—दिल्ली से झज्जर को।

२—दिल्ली से बागपत को।

३—नजफ गढ़ से बहादुर गढ़ को।

४—नजफ गढ़ से गुड़ गांवा को।

५—नजफ गढ़ से पालम को।

६—नजफ गढ़ से कंझावला को।

इस प्रकार इस प्रान्त में रेलों और सड़कों का साधन आने जाने के लिये बहुत ही उत्तम है। यमुना के आर पार जाने के लिये लोहे का बड़ा पुल है जो

बहुत ही सुन्दर और मज़बूत बना है। इस पुल पर से आने जाने वालों से अब कोई कर या महसूल नहीं लिया जाता। यह दो मंज़िला पुल है। नीचे यमुना का जल बहता है, ऊपर मोटर गाड़ियां, ताँगे, बैल गाड़ियां, पैदल चलने वाले और जानवरों के आने जाने के लिये काम में आते हैं। ऊपर दो मंजिले पुलों पर केवल रेलों के आने जाने के काम आते हैं।

घाटों पर आर पार जाने के लिये नाव भी हैं, मल्लाह लोग इनमें लोगों को एक किनारे से दूसरे किनारे पर लाते ले जाते हैं।

दिल्ली शहर में भी सड़कें उत्तम ही हैं, थोड़ी ही सड़कें ऐसी हैं जो ख़राब या रद्दी कही जा सकती हैं, अब तो इनकी भी मरम्मत होनी प्रारम्भ हो गई है।

नई दिल्ली की सड़कों का तो कहना ही क्या है, यहां की सड़कें ऐसी स्वच्छ और सुन्दर हैं कि सुई भी गिर जावे तो आप उसको सुगमता से पा सकेंगे। अधिकांश सड़कें अब तो तार या सीमेंट की ही हैं।

आने जाने के और भी साधन हैं जिनमें, ट्रेम,

बस, रिक्शा, तांगा, मोटर और टैक्सी ही विशेष हैं, बसों का भी अब अच्छा प्रबन्ध होता जा रहा है। आशा है जल्द ही और भी उत्तम हो जावेगा।

मेले—यों ही दिल्ली बहुत बड़ा नगर है ही, और सब जातियों के लोग यहाँ रहते हैं, इसलिये प्रति दिन कोई न कोई त्योहार मेला या उत्सव होता ही रहता है। दिल्ली तो आठ बार नौ त्यौहारों के लिये विख्यात है ही। इनमें भी जो प्रान्त के प्रसिद्ध मेले हैं उनका कुछ हाल लिखते हैं—

१ राम लीला—सब से अधिक शोभा रामलीला पर होती है इतनी शोभा और किसी मेले पर नहीं देखने को मिलती, यह प्रति वर्ष असौज शुक्ला एक प्रतिपदा से एकादशी तक होता है। बाजारों में बड़ी भीड़ और चहल पहल रहती है रामलीला के मैदान में तो भीड़ का कहना ही क्या स्त्री पुरुषों की भीड़ ही भीड़ दिखलाई पड़ती है। दशहरे के दिन तो यह भीड़ और भी अधिक हो जाती है, रामलीला के दिनों में सड़कें भी बंद हो जाती हैं, क्योंकि भीड़ से पार होना ही कठिन हो जाता है। भरत मिलाप का दृश्य भी देखने योग्य ही होता है।

२ दीपावली—यों तो दीपावली पर सारे नगर में सब हिन्दू घरों में रौनक होती है। चांदनी चौक और दरीबे कलां में जो जो रौनक होती है वह और जगह नहीं। यहां पर जौहरियों और शराफों की दूकानें हैं।

बुद्धो माता का मेला—चैत के प्रत्येक बुधवार को सब्ज़ी मंडो में यह मेला होता है, हजारों स्त्री, पुरुष अपने अपने बच्चों को लेकर यहाँ पूजने आते हैं, यह ऐसा ही मेला होता है जैसा गुड़गांवें में सीतला माता का।

हर एक चीज़ का राशन होने से अब इन मेलों में इतनी रौनक नहीं रहती जितनी पहिले रहा करती थी।

४ पवन परिक्षा का मेला—अण्डे वाले पहाड़ के पास भोली भटयारी के महल के निकट आषाढ़ शुदी पूर्णिमा को पवन परीक्षा का बड़ा भारी मेला होता है। दुकानें लगती है, बड़े बड़े विद्वान पंडित एकत्र होते हैं और सूर्य अस्त के समय पवन परीक्षा करते हैं कि पवन किस दिशा में चल रहा है और ज्योतिष विद्या द्वारा ऋतु का हाल बतलाते हैं। श्रावण सुदी तीज और सलौनों को भी यहां बड़ा मेला होता है।

५ कालका देवी का मेला—दिल्ली नगर से सात मील दक्षिण को ओखला स्टेशन से कुछ दूरी पर कालका जी का मन्दिर है।

हर महीने की सुदी अष्टमी को यहां मेला होता है, परन्तु चैत्र और असौज के महीने में बड़ा भारी मेला होता है और बहुत रौनक़ होती है। बहुत लोग माई को पूजने आते हैं और खूब चढ़ावा चढ़ाते हैं।

मोटर, तांगे, बैल गाड़ियां और बैल ठेले इत्यादि की खूब भरमार रहती है। स्त्रियां बड़े प्रेम से गाने गाती जाती हैं।

यों तो मेले और त्योहार होते ही रहते हैं, कभी जन्म अष्टमी है तो कभी राम नौमी है, आज अमावस्या है तो कल एकादशी है परसों पूर्णिमा इस प्रकार रोज ही कुछ न कुछ चलता ही रहता है।

६ सिक्खों के भी मेले होते हैं जो गुरुओं की याद गार में होते हैं।

७ पंजाबियों के भी इसी प्रकार बसंत, लोढी इत्यादि मेले खूब शानदार होते हैं।

८ जैनियों की रथयात्रा का मेला भी खूब धूम धाम से निकलता है परन्तु इसका समय नियत नहीं।

योंतो सवारी साल में कई एक बार निकाली जाती है। जैनियों का सब से बड़ा और विख्यात मन्दिर धर्म पुरे के अन्दर है, जिसके दर्शनों के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं।

९ नरेला देवी का मेला—दिल्ली से १८ मील उत्तर की ओर नरेले में चैत्र शुक्ला सप्तमी को देवी का मेला होता है, अच्छी खासी रौनक और चहल पहल रहती है।

१० मोहर्रम का मेला—दिल्ली में मोहर्रम का मेला भी अच्छा होता है। शिया लोग ताजिये निकालते हैं, आगे २ मर्सिये पढ़ते हैं, यह मेला हज़रत इमाम हुसेन की यादगार में मनाया जाता है। जगह जगह प्याऊयें लगाते हैं; मातमी जलूस निकाला जाता है।

११ ईद—ईद के दिन भी अच्छी रौनक होती है। ईद के दूसरे दिन सब्जी मंडी के बाहर बागों में सारे दिन खूब रौनक रहती है, यह मेला केवल मुसलमानों ही का है। इसके अलावा दिल्ली से थोड़े ही फासले पर कदम शरीफ पर हर वर्ष बड़ा भारी उर्ष होता है यहां पर भी बहुत मुसलमान साहेबान इकट्ठे होते हैं।

१२ निजामुद्दीन औलिया—दिल्ली से तीन मील

दक्षिण की ओर पुलिस की चौकी के पास ही जाते हुए दायें हाथ पर सड़क से थोड़ी ही बची हुई निज़ामुद्दीन औलिया की दर्गाह है, यहां पर वर्ष में दो बार शव्वाल और रबी उस्सानी सतरहवीं तारीख़ को बड़ा भारी मेला होता है। दूर दूर से लोग आते हैं, कव्वालों का खूब मजमुआ होता है। रातों कव्वाली होती हैं, खूब समां बंधता है।

इसी दरगाह के आंगन में शाहजहां की बेटी जहां आरा बेगम का मज़ार है उस पर यह शेर खुदा हुआ है:—

बगैर सब्जा न शोशद कसे गाजारे मरा।
कि कब्र पोशे गरीबां हमी ग्याह बस अस्त॥

पास ही एक पुरानी बावड़ी है इसमें लोग ऊंचे से कूद कूद कर नहाते हैं, परन्तु इसका जल स्वच्छ और शुद्ध नहीं रहता।

१३ फूल वालों की सैर का मेला—दिल्ली से ११ मील दक्षिण मुकाम महरौली में कुतुब मीनार के पास वर्षा के दिनों में बुद्ध और बृहस्पतिवार को श्रावण या भादों के महीने में होता है। बुधवार को हिन्दू लोग

जोग माया जी के मन्दिर में पंखा चढ़ाते हैं। दूसरे दिन बृहस्पतिवार को मुसलमान लोग ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी के मजार पर पंखा चढ़ाते हैं। इस मेले में दिल्ली वाले शौकीनों की खूब भीड़ भीड़ रहती है। अब यह मेला कभी कभी होता है।

१४ छड़ियों और वाराही के मेले—यह भी कई एक स्थानों पर होते हैं इनमें भी खूब रौनक रहती है।

१५ घोड़ों और पशुओं की भी प्रति वर्ष एक नुमाइश (प्रदर्शनी) जाड़ों में होती हैं। इसमें भी अच्छे अच्छे पशु आते हैं।

१६ और भी स्वदेशी प्रदर्शनी, कला प्रदर्शनी इत्यादि होती ही रहती है।

इनसे जनता को बड़ा लाभ होता है, कृषि और शिल्प कला के नवीन आविषकार देखने को मिलते हैं।

शिक्षा—दिल्ली नगर यों तो प्राचीन काल से ही विद्या और कला का केन्द्र रहा ही है। जब से यह भारत की राजधानी बना है विद्या और कला की अच्छी उन्नति हो रही है, इस लड़ाई के समय तो बहुत

ही उन्नति हुई है। १६२१ से तो इस प्रान्त की अलग ही युनीवर्सिटी (विश्व विद्यालय) बना दी गई है जो दिल्ली यूनीवर्सिटी कहलाती है। दिल्ली में जितने विद्यालय और महा विद्यालय हैं वह सब इसी के आधीन हैं, इसमें कानूनी और तिजारती कॉलेज भी खोल दिये गये हैं, इससे नगर के और आस पास के लोगों को बहुत लाभ पहुँचा है। साइंस की शिक्षा के लिये भी अत्युत्तम प्रबन्ध किया गया है। इस यूनिवर्सिटी में दो प्रकार के कालेज हैं। प्रथम श्रेणी के कालेज जिनमें बी० ए० और एम० ए० तक शिक्षा दी जाती है, इनमें सेन्ट स्टीफन्स मिशन कालेज, हिन्दू कालेज, राम जस कालेज अरेविक कालेज, इन्द्र प्रस्थ कालेज, लेडी इरविन कालेज कौमर्शल कालेज इत्यादि हैं दूसरी श्रेणी में जितने भर इन्दर कालेज हैं शामिल हैं। इनके अतिरिक्त हाई स्कूल भी हैं।

गवर्नमेंट हाई स्कूल, मिशन हाई स्कूल, रामजस हाई स्कूल, जैन हाई स्कूल, महावीर जैन हाई स्कूल, दयानन्द एंग्लो वैदिक हाई स्कूल, दयानन्द एंग्लो वैदिक नेशनल हाई स्कूल, बंगला हाई स्कूल, अरेविक हाई स्कूल, फतहपुरी मुस्लिम हाई स्कूल, लेडी इरविन

हाई स्कूल, एम० बी० हाई स्कूल, हार कोट बटलर हाई स्कूल इत्यादि यह सब तो दिल्ली और नई दिल्ली में ही हैं।

डि० बो० हाई स्कूल नरेला, हेल्पी रिफाहे आम हाई स्कूल नरेला, जार हाई स्कूल खेड़ा गढी यह बाहर ग्रामों और कस्बों में हैं। इनमें एन्ट्रेंस तक शिक्षा दी जाती हैं, परन्तु अब यूनिवर्सिटी ने अपना शिक्षा क्रम बदल दिया है, अब यह हाई स्कूल न कहला कर हायर सेकन्ड्री इंसटीट्यूशन कहलावेंगे और इनमें एक साल का कोर्स और बढ़ा दिया गया है और बी० ए० का कोर्स भी एक साल का और बढ़ा कर एफ० ए० की डिग्री को उड़ा ही दिया है। इस प्रकार विद्यार्थियों को विद्यालय के वर्षों में तो कोई अंतर नहीं पड़ा परन्तु एफ० ए० की सनद का अंत हो गया।

इन हाई स्कूलों के अतिरिक्त शाहदरा, दिल्ली छावनी, नजफ गढ़ में अंग्रेज़ी मिडिल स्कूल भी हैं, बर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है और भी बहुत सी मिडिल वा प्राइमरी पाठशालायें भिन्न भिन्न ग्रामों में भी हैं। कमेटी की ओर से भी नगर में मिडिल और प्राइमरी

पाठशालायें हैं इनमें चार पांच अंग्रेज़ी मिडिल हैं और प्राइमरी हैं। नगर भर में प्राइमरी शिक्षा मुफ्त और लाजमी (अनिवार्य) है। रात के समय पढ़ाने के लिये भी कई एक स्थानों में रात्रो पाठशालायें खुली हैं जो लोग दिन में काम काज करने या निर्धनता या और किसी कारण से दिन में न पढ़ सकें वह रात्रि को एक दो घंटा पढ़ सकें। जो दिन के समय नौकरी करते हों वह भी इन पाठशालाओं से लाभ उठा सकते हैं।

लेडो हार्डिङ्ग कालेज—इसमें स्त्रियों को डाक्टरी सिखलाई जाती है।

तिब्बिया कालेज—यहां लड़कों को वैद्यक और यूनानी सिखलाई जाती है, यहां पढ़ कर वैद्य और हकीम बनते हैं। इनके अतिरिक्त कई एक और भी वैदिक पाठशालायें और संस्कृत पाठशालायें भी हैं, जिनमें बहुत से विद्यार्थी मुफ्त में शिक्षा पाते हैं और खाना, कपड़ा, पुस्तकें, रहने को स्थान सब पाठशाला से ही मिलता है। यह सब पाठशालायें धनिकों की सहायता से ही चलती हैं।

नार्मल स्कूल—इसमें स्त्री और पुरुषों को पढ़ाने की ट्रेनिङ्ग दी जाती है।

शिल्प विद्यालय—यह भी कई एक हैं, जहां लड़कियो को पढ़ाने के अतिरिक्त शिल्पकारी भी सिखलाई जाती है।

कन्या पाठशालायें—इन्द्र प्रस्थ कन्या पाठशाला, छीपी वाड़ा कन्या गुरुकुल, आर्य कन्या पाठशाला, इसी प्रकार आर्य समाज ने और भी कन्या पाठशालायें खोली हुई हैं जहां लड़कियां ही पढ़ती हैं। इसी प्रकार कई एक म्युनिसिपिल गर्ल स्कूल भी हैं।

मकतव—मुसलमानों ने भी मस्जिदों में मजहवी तालीम के लिये मकतब खोले हैं यहां बच्चों को कुरान पढ़ाना सिखलाया जाता है, लड़कियों के लिये भी इसी प्रकार कुछ इंतजाम किये हैं।

गुरुकुल—आर्य समाज की ओर से एक गुरुकुल जो प्रान्त की सीमा पर तुगलका बाद के निकट है स्थापित किया हुआ है। इसको इन्द्र प्रस्थ गुरुकुल कहते है। इसमें आधुनिक तथा प्राचीन दोनों प्रकार की शिक्षा प्राचीन प्रणाली के अनुसार ही दी जाती है और सब विद्यार्थियों को २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रूप में रहना होता है।

प्रान्त में और भी बहुत प्राइवेट स्कूल तथा पाठशालायें है जिनमें लड़के तथा लड़कियों को पंजाब युनिवर्सिटी की मैट्रिक, रत्न, भूषण, प्रभाकर आदि परीक्षाओं के लिये शिक्षा दी जाती है। प्राइवेट संस्थाये विद्यार्थियों को देहली प्रान्त के आस पास के प्रान्तों के बोर्ड की परीक्षाओं के लिये भी तैयार करती है। बच्चों के लिये मोहल्लों में भी बहुत सी प्राइवेट पाठशालायें हैं।

शिक्षा प्रबन्ध—उच्च शिक्षा का प्रबन्ध युनिवर्सिटी के हाथ में हैं तथा स्कूल और पाठशालाओं का प्रबन्ध सपरिंटेन्डेन्ट साहब शिक्षा विभाग के हाथ है। इनके साहायक इनके और कर्मचारी असिस्टेन्ट डिस्ट्रक्ट इन्सपेक्टर इत्यादि हैं जो इनकी देख भाल करते है।

कमेटी—स्वास्थ्य, स्वच्छता, प्रकाश, जल तथा शिक्षा आदि का प्रबन्ध कमेटी (म्युनिसिपिलटी) के आधीन है। इसका बड़ा दफ्तर घंटाघर के पास ही है। इसकी ओर से नगर में बिजली घर, पानी के नल तथा बहुत से औषधालय और विद्यालय खुले हुए हैं। औषधालय जनाने, मर्दाने, बच्चों के लिये, यूनानी वैदिक सब प्रकार

के खुले है जहां दवायें मुफ़ बांटी जाती है, गरीब लोग इनसे बहुत फायदा उठाते है।

दाइयों का भी अच्छा प्रबन्ध किया गया है जो अपने २ हल्कों में प्रसव कराने के लिये विना फीस सेवा करती है। अस्पतालों में भी प्रसव के लिये अच्छा प्रबन्ध है जहां स्त्रियों को रक्खा जाता है और प्रसव के १० या १२ दिन पश्चात् उन्हे उनके घर जाने की आज्ञा देदी जाती है। इन सब कामों को चलाने के लिये कमेटी ने लोगों पर टैक्स लगाया हुआ है। अक्टूबर सन् ४६ तक कमेटी के प्रेसीडेंट सरकारी तौर पर डिप्टी कमिश्नर साहब ही होते थे। परन्तु अब मेम्बर लोग अपना प्रेसीडेन्ट अपने आप ही चुनते हैं।

नगर

देहली—यह बड़ा शहर यमुना नदी के दक्षिणी तीर बसा हुआ है, भारतवर्ष का यह बहुत ही प्राचीन शहर है। यह कई बार उजड़ा और फिर बसा परन्तु इन्हीं खण्डरों पर पहले से भी अधिक सम्पन्न और

मनुष्यों से भरपूर होता रहा है। इस नगर के खण्डहर ४५ से ५० मील के घेरे में मिलते हैं। यह नगर सदा से ही गौरव पूर्ण रहा है। जब से यह भारतवर्ष की राजधानी बना है तब से दिन प्रतिदिन इसकी शोभा बढ़ती ही जा रही है। अब तो इसकी शोभा अवर्णनीय हो चली है। सब से विशेष बात यह है कि भारत स्वतन्त्र सरकार की नींव यहीं से पड़ी है और इससे इसके नाम को चार चांद लग गये हैं। वर्तमान पुरानी देहली को शाहजहां बादशाह ने १६४८ के लगभग बसाया था और इसको शाहजहां बाद कहते थे। इसके तीन ओर तो पत्थर की बड़ी पक्की दीवार थी और एक ओर लाल किला। दीवार की लम्बाई साढ़े पांच (५॥) मील और चौड़ाई ४ गज़ और ऊंचाई ६ गज़ है।

इसमें १२ दर्वाजे ४ खिड़कियां और ६४ बुर्ज थे।

दिल्ली दरवाज़ा, तुर्कमान दर्वाजा, अजमेरी दर्वाज़ा, लाहौरी दर्वाज़ा मोरी दर्वाज़ा, काश्मीरी दर्वाज़ा, यह तो बड़े बड़े दर्वाजे हैं।

अब तो सरकार ने इस दीवार को तुड़वाना प्रारम्भ कर दिया है। और तुर्कमान दर्वाजे के दोनों ओर से तुड़ाई भी होने लगी है। इसके टूट जाने से

नई दिल्ली व पुरानी दिल्ली अब एक ही मिली जुली दिखाई देने लगेंगी।

प्राचीन समय की इमारतें भी बड़े महत्व की हैं, इनके कारण दूर दूर से यहाँ तक कि विदेशों से भी लोग इस नगर की यात्रा को आते हैं।

निगम बोध घाट, लाल किला, जामा मस्जिद, पुराना किला, फीरोज शाह का कोटला, हुमायूं का मकबरा, निजामुद्दीन औलिया का मज़ार, तुग़लकाबाद, कुतुब की लाट, राय पिथौरा का किला, लोह लाट, योग माया जी का मन्दिर, हौज़ खास, हवाई अड्डा सफदर जंग, वायसरीगल लाज, ऐसम्बली भवन, रेडियो स्टेशन यन्त्र मन्त्र, उग्र सेन की बावरी, पत्री गौरी शंकर जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, कोतवाली के पास ही सुनहरी मस्जिद, घंटा घर, म्युनिसिपल आफिस, फतहपुरी मस्जिद पावर हाऊस सदर बाज़ार, सब्ज़ी मण्डी, जीतगढ़ आनन्द पर्वत, लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर गोल मार्केट के पास ईसाइयों का गिरजा, दीवान भवन, हनुमान मन्दिर, आर्यसमाज

भवन, हिन्दू महासभा भवन, इत्यादि तथा कैनाट पेलेस नई दिल्ली का बाजार या इण्डिया गेट देखने योग्य हैं।

बाहर से आने वालों के लिये दिल्ली की एक झलक

स्टेशन से चांदनी चौक को आते समय एक लम्बा चौड़ा बाग है, इसको मलका का बाग या कम्पनी बाग कहते हैं, सुबह शाम बहुत लोग भ्रमण करने के लिये यहां आते हैं। इस बाग के दक्षिणी किनारे पर हार्डिंग लाईब्रेरी है, यहां लोग पत्र पत्रिकायें पुस्तकें आदि पढ़ सकते हैं अच्छा प्रबंध है। बाग के दक्षिण में चांदनी चौक के एक ओर कमेटी घर की बड़ी इमारत है। इसके बिलकुल सामने ही मलका विक्टोरिया की मूर्ति है, मूर्ति के सामने ही ठीक सड़क के बीचो बीच घण्टा घर की ऊंची इमारत है, इसमें चारों ओर घण्टे लगे हैं, यह अपने नमूने का निराला ही बना हुआ है। चांदनी चौक ही दिल्ली का सबसे अच्छा और सुन्दर बाजार है। इसके एक सिरे पर लाल किला व दूसरे सिरे पर फतहपुरी मस्जिद है। बाजार में दोनों ओर पैदल चलने

के लिये पटरियां बनी हैं पटरियों के बराबर दोनों ओर ट्रेम की लाइनें हैं इसी बाजार में घण्टा घर से लाल किले की तरफ को जाते हुए थोड़ी दूर चलते ही दायें हाथ पर मोती बाजार है, यहां फल सब्जी वगैरा अच्छी साफ सुथरी मिलती हैं, इसमें एक हलवाई व एक दूध पेड़े वाले की दुकान भी अच्छी हैं। इसके पास ही दूसरी ओर सेंट्रल बैंक की बड़ी इमारत है। घण्टा घर के पास ही लाइडस बैंक भी अच्छा बड़ा बैंक है, इसी बाजार में तमाम अच्छे बड़े बड़े बैंक हैं।

मोती बाजार से थोड़ा आगे चलते ही परावठे वाली गली है, यह भी परावठों के लिये विख्यात है; एक बार तो यहां आने वालों को इनका स्वाद लेना ही चाहिये, जो खावेगा वह सदा याद रक्खेगा। थोड़ा और आगे चलते ही फव्वारा है यह भी प्रसिद्ध स्थान है, कोतवाली के ठीक सामने ही है, कोतवाली के एक ओर सुन्दरी मस्जिद है और दूसरी ओर सिक्खों का बड़ा गुरुद्वारा है, शीश गंज के नाम से प्रसिद्ध है। यह गुरुद्वारा व मस्जिद दोनों बड़े ही महत्व के स्थान हैं।

यह मस्जिद वह स्थान है, जहां नादिर शाह ने बैठ

कर क़त्लेआम का हुक्म दिया था, इसी हुक्म से दिल्ली की जनता पर बड़ा जुल्म ढाया गया था।

गुरुद्वारा—यह वह स्थान है जहाँ गुरु तेग बहादुर जी बलिदान हुए थे, अब यहां पर यह बड़ी भारी इमारत बना दी गई है। यह सिक्खों का बड़ा पवित्र स्थान है। हज़ारों सिक्ख स्त्री, पुरुष रोज़ यहां दर्शनों को आते हैं। फव्वारे के आस पास कई एक सिनेमा घर, बड़े बड़े डाक्टर, बड़े बड़े दवा बेचने वाले, ग्रामो फोन की दुकानें, मशहूर, घण्टे वाले शाही हलवाईयों की दुकाने और इसी के पास बाग़ का दर्वाज़ा है इसी दर्वाज़े के अंदर बड़ा मैदान है, जो गांधी ग्राउंड के नाम से विख्यात है। बड़ी बड़ी सभायें, प्रदर्शनी, राम लीला इत्यादि इसी स्थान पर होती हैं।

आई० एन० ए० के बंदी, ढिल्लन, शाह नवाज और सहगल की रिहाई पर जो जलसा उस खुशी में हुआ था वह भी इसी स्थान पर हुआ था, जन समूह किस प्रकार उमड़ा पड़ रहा था यह देखने ही योग्य था, जनता को खड़े रहने को भी यहां स्थान न था, बाहर सड़कों छतों पर भी कही स्थान न था तमाम सड़क पर रास्ता बंद था जनता का उत्साह देखने योग्य ही था।

कोतवाली से थोड़ा आगे लाल किले की ओर चलने पर तसवीर, खिलौनों, रेडियो और बिजली के समान बेचने वालों की दुकानें हैं, थोड़ा आगे चलने पर दायें हाथ पर ही दरीवा कलां (बड़ा दरीवा) आ जाता है। यह दिल्ली में सब से बड़े माल दार लोगों का स्थान है। यहाँ बड़े बड़े जौहरियों, चांदी सोने वालों और जेवरात वालों की बड़ी दुकानें हैं, हिन्दी तथा स्कूल की पुस्तकों की स्टेशनरी और रोशनाई वालों की पुरानी मशहूर दुकानें भी यहीं हैं। इसके बिल्कुल सामनें और जौहरियों की दो चार दुकानें हैं, फिर दायें हाथ पर साइकिल और बच्चा गाड़ियों की दुकानें हैं, एक किताब वाले की और कुछ डाक्टरों की दुकानें हैं फिर बंगाली रस गुल्ले वाले की बड़ी मशहूर दुकान कमलालय भी यहीं पर है। इसके दूसरी ओर बायें हाथ पर जौहरियों की दुकानों से आगे गिर्जा घर, सिनेमा घर, रिजर्व बैंक की बड़ी इमारत व चश्मे और बिजली वालों की बड़ी दुकानें हैं, इसी कोने से एक छोटी सड़क घास के मैदान के साथ साथ जाती है इसी पर आर्य समाज का एक बड़ा भवन है जो

दीवान हाल के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर आर्य समाज की सभायें होती हैं, मुसाफिरों के ठहरने का भी अच्छा प्रबन्ध है। इसके सामने ही घास का बड़ा मैदान है।

चांदनी चौक से लाल किले को जाते हुए यह दीवान हाल के सामने का मैदान बायें हाथ पर पड़ता है, अब दायें हाथ पर दूसरी ओर श्री गौरी शंकर जी का मन्दिर बड़ा ही प्रसिद्ध और प्राचीन है। इसका पुराना नाम आपा गङ्गाधर का शिवालय भी है। यह मन्दिर आपा साहब ने सम्राट शाह जहां के समय में बनवाया था, इस मन्दिर की विशेषता इसकी सुन्दर विशाल प्रतिमा है, जो अन्य मन्दिरों में बहुत ही कम देखने को मिलेगी। शिव मन्दिरों में आम तौर पर शिव लिंग ही हुआ करते है, परन्तु इसमें साक्षात शिव जी ही विराजमान हैं। पहिले ये छोटा सा साधारण मन्दिर था परन्तु अब बहुत विशाल बन गया है और अन्य मूर्तियां भी स्थापित कराई गईं हैं। सहन चबूतरा, सीढ़ियां भी बहुत सुन्दर संग मरमर की बनाई हैं।

गौरी शंकर जी मन्दिर के पास ही एक लाल रंग की बड़ी सी इमारत बगीची के अंदर है, यह भी

जैनियों का प्राचीन मन्दिर है। इसको उर्दू मन्दिर भी कहते थे।

इसको उर्दू नाम इसलिये दिया बताते है कि (उर्दू शब्द का अर्थ है पल्टन) इसकी नींव मुसलमान बादशाह के किसी जैन सिपाही ने डेरे मे एक मूर्ति रखकर डाली थी, बाद में उसी स्थान पर यह मन्दिर बना दिया गया।

अब एक चौराहा आ जाता है और इस चौराहे को पार करके हम लाल किले की सीध में प्रवेश करते हैं। थोड़ी दूर चलने पर उसी सड़क के दायें हाथ पर इस किले का एक फाटक आता है जिसे लाहौरी दर्वाज़ा कहते हैं। इस फाटक के दाये हाथ पर एक छोटी सी लकड़ी की दूकान सी बनी हुई और इसी स्थान से क़िला देखने जाने वालों को टिकट लेना पड़ता है जिसका मूल्य दो आना है। इस टिकट को लेने के पश्चात् आप फाटक में प्रवेश कर सकते हैं और वे सब स्थान जो साधारण जनता के देखने के लिये खुले हैं देख सकते हैं।

इस किले की लम्बाई ३००० फुट तथा चौड़ाई

१८०० फुट है और इसका कुल घेरा १॥ मील के लगभग है। यह किला अष्ट कोण का है, दो कोने पूर्व और पश्चिम के बड़े है तथा छः (६) जो उत्तर और दक्षिण मे है छोटे हैं। इसकी दीवारें यमुना नदी की ओर ६० फीट और शहर की ओर ७५ फीट ऊची हैं। पहले समय में इसके सामने जो खाई थी उसकी गहराई ३० फुट और चौड़ाई ७५ फुट थी।

इस किले की लागत का अनुमान उस समय के रुपयों में १०००००००० रुपया बताते हैं। आजकल तो कहना ही क्या, आज तो उसका मूल्य चार पांच गुणा होगा। यह इमारत बहुत ही विशाल तथा अनुपम है।

नौबत खाना, दीवान खाना, दीवानखास नहाने का स्थान (हम्माम) मोती महल (रंग महल) मुसम्मन बुर्ज, शाह बुर्ज, मसजिद इत्यादि देखने योग्य हैं। इसका अजायब घर भी जहां कुछ पुराने सामान हथियार वर्दी आदि रखे है देखने योग्य हैं।

जब से किले पर अंग्रेज़ों का राज्य हुआ है तब से इसकी शोभा कुछ कम हो गई है क्योंकि इसके बहुत से भाग को उजाड़ कर बैरेक (फौज के रहने का स्थान) बना दिये गये हैं तथा अब वह जनता सम्बन्धी वस्तुएं कम है और फौज का ही राज्य है। किन्तु जितनी

वस्तुए हैं वे भी प्राचीन काल को भली प्रकार बताती हैं इन सबों का विस्तारपूर्वक वर्णन हम दिल्ली-दर्शन अंक में मिलेगा।

पूरी जानकारी के लिये आप दिल्ली दर्शन का अवलोकन करें। इसमें भरसक प्रयत्न किया गया है कि आप को दिल्ली की अधिका अधिक जानकारी इससे प्राप्त हो सके।

दिल्ली भारत की राजधानी होने का गौरव भौगोलिक दृष्टि से भी बहुत ही महत्व का है.—क्यों कि यह ऐसे स्थान पर बसा है कि प्रकृति ही ने इसको राजधानी बनने का स्थान दिया है.—यहां से बम्बई ९६० मील, कलकत्ता ९५° मील, करांची ९४० मील इसी प्रकार ध्यान से देखने से बीचो बीच ही स्थित प्रतीत होता है।

रेलों, सड़कों और व्यापार का केंद्र हैं। आज दिन तो भारत का मुख्य नगर है ही। आज कल भी स्वतन्त्रता की नींव भी यहीं से पड़ी है। बड़े ही महत्व का स्थान है।

दिल्ली दर्शन को अवश्य पढ़िये इससे आपको यथाप्त जानकारी प्राप्त हो सकेगी।